بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974.E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-02.06.2023 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

बदर की लड़ाई के संदर्भ में आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का जीवन परिचय एवं ऐतिहासिक घटनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 2 जून 2023, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद यू. के.।

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- मैं बदरी सहाबियों के जीवन परिचय तथा बलिदानों के विषय में सम्बोधनों की एक श्रंख्ला बयान करता रहा हूँ। अनेक लोगों ने यह अभिलाषा व्यक्त की तथा मुझे लिखा कि यदि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत न बयान की जाए तो प्यास रह जाएगी क्यूँकि मूलतः केन्द्र तो आप स. की ज़ात थी जिसके चारों ओर सहाबी घूमते थे, जिसके साथ जुड़ कर सहाबियों ने क़ुर्बानियाँ करने के अदभुत उदाहरण प्राप्त किए तथा नए नए अंदाज़ सीखे और तौहीद को फैलाने तथा स्वयं उसका नमूना बनने के वे स्तर क़ायम किए जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दिव्य शक्ति और अल्लाह तआला के विशेष प्रिय होने का प्रमाण है। अतः आप स. की सीरत का बयान भी अनिवार्य है।

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय के विभिन्न आयामों पर पिछले कुछ समय में ख़ुत्बे दिए भी गए हैं परन्तु आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत ऐसी है कि जिसे सीमित नहीं किया जा सकता। एक एक गुण ऐसा है कि जिसको कई कई ख़ुत्बों में भी नहीं समेटा जा सकता। यह सीरत इन्शाअल्लाह समय समय पर बयान भी होती रहेगी अपितु हर एक ख़ुत्बः एवं हर एक सम्बोधन में कोई न कोई बात किसी न किसी रंग में बयान होती भी रहती है क्यूँकि यही हमारे जीवन की धुरी है तथा इसके बिना हमारा दीन और हमारा ईमान पूरा नहीं हो सकता तथा अल्लाह तआला की भेजी हुई शरीअत के अनुसार अमल भी नहीं हो सकता। अतएव इस समय मैं बदर की लड़ाई के हवाले से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत एवं इतिहास की घटनाएँ पेश करूँगा और यह श्रंखला आगे के कुछ ख़ुत्बों तक चलेगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सुन्दर आचरण ही है जिसने सहाबियों को निःस्वार्थ बलिदानों की भावना प्रदान की तथा यह भावना देकर ग़ाज़ियों एवं शहीदों और अल्लाह तआला के प्यारों और अल्लाह

तआला के उनसे प्रसन्न रहने वालों में शामिल फ़रमाया और जिसके नमूने हमने अपने जीवन में देखे। अतः इस युद्ध के संदर्भ में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन परिचय का बयान आवश्यक है। युद्ध की घटनाओं से पहले उन कारणों का बयान करना भी आवश्यक है जिनके कारण युद्ध हुआ। इस लिए पहले मैं कुछ न कुछ भूमिका बयान करूँगा। इस पृष्ट भूमि में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत तथा आपकी लाई हुई सुन्दर शिक्षा के विभिन्न आयाम पकट हो जाते हैं।

बदर की लड़ाई के कारण बयान करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. ''सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन स.'' में लिखते हैं कि मक्का के काफ़िरों ने इस्लाम तथा मुसलामनों के विरुद्ध जो अनैतिक व्यवहार एवं योजनाएँ बनाईं वे किसी भी ज़माने तथा क्षेत्र से हट कर दो क़ौमों में युद्ध छिड़ जाने के लिए पर्याप्त कारण थे। धिक्कार एवं परिहास एवं अपमान जनक व्यवहार के साथ मुसलमानों को एक ख़ुदा की इबादत तथा तौहीद की घोषणा करने स जबरन रोका गया। उन्हें मारा पीटा, उनके धन सम्पत्ति को लूट लिया, उनमें से कुछ लोगों की हत्या की, उनकी महिलाओं को प्रताड़ित किया। जब कुछ मुसलमान हब्शा देश की ओर हिजरत कर गए तो नजाशी के दरबार तक उन मुसलमानों को वापस लाने की लिए पीछा किया। मुसलमानों के सरदार अर्थात आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को हर प्रकार के कष्ट दिए गए, ताइफ़ में पत्थर बरसाए गए और अन्ततः मक्का की संसद में समस्त सरदारों की सहमति से यह निर्णय लिया गया कि मुहम्मद (रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का वध कर दिया जाए। फिर इस रक्तरंजित विज्ञप्ति के अनुसार काम करने के लिए मक्का के युवाओं ने रात के समय आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर पर हमला किया। आप स. सुरक्षित रहे तथा जान बचा कर सौर नामक गुफा में शरण ली। क्या ये समस्त योजनाएँ तथा रक्तरंजित ज्ञापन मक्का के काफ़िरों की ओर से युद्ध की घोषणा नहीं थी? क्या क़ुरैश के ये अत्याचार मुसलमानों की ओर से बचाव की लड़ाई के लिए पर्याप्त आधार नहीं हो सकते? क्या दुनिया में कोई स्वाभिमानी जाति इन परिस्थितयों के होते हुए इस अल्टोमेटम को स्वीकार कर सकती है जो काफ़िरों ने मुसलमानों को दिया? निश्चित ही निश्चय ही यदि मुसलमानों की जगह कोई अन्य क़ौम होती तो वह इससे बहुत पहले काफ़िरों के विरुद्ध लड़ाई के लिए आतुर हो जाती। किन्तु मुसलमानों को उनके आक़ा व मौला आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ओर से युद्ध का आदेश न था।

जब मक्का में कुछ सहाबियों ने काफ़िरों के अत्याचार पर प्रतिक्रिया देने की अनुमति चाही तो आप स. ने मना करते हुए फ़रमाया कि मुझे तो क्षमा करने का आदेश दिया गया है।

इस प्रकार अत्याचार सहन करते हुए जब एक लम्बी अवधि व्यतीत हो गई और मुसलमानों को मक्का से निष्कासित होना पड़ा तो ख़ुदा ने मुसलमानो को अपने बचाव के लिए युद्ध की अनुमति प्रदान की। अतः आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत क़ुरैश की चेतावनी को क़बूल किए जाने का संकेत था तथा इसमें ख़ुदा की ओर से युद्ध की घोषणा का एक गुप्त संकेत था, जिसे काफ़िर एवं मुसलमान दोनों समझते थे। खेद है कि अत्याचारी क़ुरैश ने इस गुप्त संकेत को न समझा, अन्यथा यदि अब भी काफ़िर रुक जाते तथा दीन के मामले में बलपूर्वक विरोध से काम लेना छोड़ देते और मुसलमानों को शांति से जीवन व्यतीत करने देते तो निःसन्देह उन्हें अब भी क्षमा कर दिया जाता। परन्तु भाग्य का लिखा पूरा होना था और आँहुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम की हिजरत ने जलती पर तेल का काम दिया। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हिजरत के बाद काफ़िरों ने जो सबसे पहला काम किया, वह यह था कि वे आपका पीछा करते हुए निकल खड़े हुए तथा सौर नामक गुफा के मुंह पर जा पहुंचे। अल्लाह तआला ने उस अवसर पर आपकी विशेष सहायता फ़रमाई और क़ुरैश की आँखों पर पर्दा डाल दिया। क़ुरैश इस पर भी नहीं रुके तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पकड़ कर लाने वाले के लिए एक सौ ऊँटों के पुरस्कार की घोषणा कर दी। अतएव बीसियों नौजवान आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोज में निकल खड़े हुए, इस उपाय में भी क़ुरैश को असफलता का मुंह देखना पड़ा।

इसी प्रकार जब आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना हिजरत कर गए तो मक्का के क़ुरैश ने मदीने के रईस अब्दुल्लाह बिन अबी सलूल और उसके साथियों को एक धमकी भरा पत्र लिखा कि तुमने हमारे साथी को शरण दी है, हम ख़ुदा की क़सम खा कर कहते हैं कि या तो तुम उसके साथ जंग करो अथवा उसे अपनी बस्ती से निकाल दो, अन्यथा हम सब एक होकर तुम पर हमला करेंगे तथा तुम्हारे यौद्धाओं की हत्या कर देंगे और तुम्हारी महिलाओं को अपने आधीन कर लेंगे। जब यह पत्र अब्दुल्लाह बिन अबी तथा उसके बुत परस्त साथियों का मिला तो वे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जंग करने के लिए एकत्र हो गए। जब आपको इस बात की सूचना मिली तो आप उनसे मिले और उन्हें समझाया और युद्ध से रोका।

इसी प्रकार मक्का के क़ैरशियों ने सुसंगठित होकर अरब के अन्य क़बोलों को मुसलमानों के विरुद्ध उकसाया तथा युद्ध के लिए तय्यार किया। इसके परिणाम स्वरूप पूरा अरब देश मदीने वालों का दुशमन हो गया तथा यह हाल हो गया कि मदीने के चारों ओर आग ही आग है।

स्वयं मदीने के भीतर यह स्थिति थी कि अभी तक औस तथा ख़िज़रज क़बीलों के अन्दर एक विशेष समुदाय शिर्क पर क़ायम था तथा यद्यपि वे प्रत्यक्षतः अपने भाई बन्दों के साथ थे किन्तु ऐसी अवस्था में एक मुशरिक का क्या विश्वास किया जा सकता था। फिर दूसरे नम्बर पर मुनाफ़िक़ थे जो गुप्त रूप से इस्लाम के दुशमन थे। तीसरे नम्बर पर यहूदी थे जिनके साथ यद्यपि समझौता हो चुका था परन्तु उन यहूदियों की दृष्टि में समझौते का कोई महत्त्व नहीं था। अभिप्रायः यह है कि उस समय मदीने के अन्दर की स्थिति मुसलमानों के विरुद्ध एक बारूद के गुप्त भंडार से कम नहीं थी तथा अरब के क़बीलों की तनिक सी चिंगारो मदीने के मुसलमानों को भक से उड़ा देने के लिए काफ़ी थी। उससे अधिक विकट समय इस्लाम पर कभी नहीं आया। अतः ऐसे समय में आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ख़ुदा की वह्यी अवतरित हुई तथा तलवार के साथ जिहाद का आदेश नाज़िल हुआ।

शक्ति के साथ बचाव के लिए युद्ध करने के विषय में सबसे पहली आयत 12 सिफ़र के महीने, 2 हिजरी में नाज़िल हुई। उस समय तक आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मदीना तशरीफ़ लाए लगभग एक वर्ष का समय हो चुका था। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यह हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. की खोज है। कुछ लेखकों के अनुसार यह आयत हिजरत के तुरन्त बाद नाज़िल हुई थी क्यूँकि हिजरत के तुरन्त बाद ही आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों के कुछ दलों को रोकने के लिए हथ्यिार बन्द दल रवाना फ़रमाए थे।

सूरः हज की ये दो आयतें हैं जिनमें तलवार से लड़ाई करने की पहली बार अनुमति दी गई है। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उन लोगों को, जिनके विरुद्ध जंग की जा रही है, युद्ध करने की आज्ञा दी जाती है क्यूँकि उन पर अत्याचार किए गए। निश्चित रूप से अल्लाह उनकी सहायता करने पर पूर्णतः सामर्थ्य रखता है। अर्थात वे लोग जिन्हें उनके घरों से अन्यायपूर्वक निकाला गया, केवल इस कारण से कि वे कहते थे कि अल्लाह हमारा रब्ब है। यदि अल्लाह की ओर से लोगों को बचाना उनमें से कुछ लोगों को कुछ के विरुद्ध भिड़ा कर लोगों का बचाव न किया जाता तो मठ, कलीसा, यहूदियों क उपासना गृह तथा मस्जिदें, जिनमें प्रायः अल्लाह का नाम लिया जाता है, ध्वस्त कर दिए जाते। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया कि यहाँ हर एक धर्म के उपासना गृह का नाम लेकर उसकी सुरक्षा की बात की गई है।

जिहाद अनिवार्य होने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों के अत्याचार से मुसलमानों को सुरक्षित रखने के लिए आरम्भिक रूप में चार उपाय धारण किए। पहला यह कि आपने स्वयं यात्रा करके मदीने के आस पास बसने वाली क़ौमों से समझौते किए। दूसरे यह कि आपने छोटी छोटी सूचना भेजने वाली पार्टियाँ मदीने के आस पास के क्षेत्र में भिजवाना शुरु कीं। तीसरे यह कि इन पार्टियों की रवानगी से कमज़ोर मुसलमानों को मदीने आकर मुसलमानों से मिल जाने का अवसर मिल गया। चौथे यह कि आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने काफ़िरों के उन व्यापारिक दलों की रोक थाम शुरु फ़रमा दी जो मक्का से शाम देश की ओर आते जाते हुए मदीने के पास से हो कर जाते थे।

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने यह क्रम आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद निम्नलिखित चार मृतकों का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

1- मुकर्रम ख़्वाजा मुनीरुद्दीन क़मर साहब ऑफ़ यू.के. इनका जनाज़ा मौजूद था। 2- डाक्टर मिर्ज़ा मुबश्शिर अहमद साहब, आप हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के पोते तथा डाक्टर मिर्ज़ा मुनव्वर अहमद साहब के बेटे थे। मरहूम हज़रत नवाब मुबारका बेगम साहिबा रज़ी. के नवासे थे। पिछले दिनों 79 वर्ष की आयु में आपका निधन हुआ। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। आप वाक़िफ़े ज़िन्दगी थे तथा फ़ज़्ले उमर हस्पताल रबवा में लगभग पचास वर्ष सेवा करने का सुअवसर मिला। 1983 से मृत्यु तक वक़्फ़े जदीद बोर्ड के मेम्बर रहे। मरहूम निर्धनों के सहायक, ख़िलाफ़त से घनिष्ट सम्बंध रखने वाले, ख़ानदान के लोगों के साथ सुन्दर व्यवहार करन की भावना से ओत-प्रोत, बिना भेद भाव सबका निःस्वार्थ उपचार करने वाले, जमाअत के निज़ाम का आज्ञा पालन करने वाले, नेक स्वभाव के स्वामी थे। 3- सय्यदा अम्तुल बासित साहिबा पतनी सय्यद महमूद साहब ऑफ़ इस्लामाबाद, पाकिस्तान। 4- मुकर्रम शरीफ़ अहमद साहब बन्देशा ऑफ़ अधवाली ज़िला फ़ैसलाबाद। हुज़ूर-ए-अनवर ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जों की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ
وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ
وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ
وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652
टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131